

### Discipline

### अनुशासन

Have you ever sat still? You try it sometime and see if you can sit very quietly, not for any purpose, but just to see if you can sit quietly. The older you grow, the more nervous, fidgety, agitated, you become. Have you noticed how old people keep jogging their legs? Even little ones do it, all the time. It indicates, does it not, a nervousness, a tension. We think this nervousness, this tension, can be dispelled by various forms of discipline. You know what that word means? Your teachers talk to you about discipline. The religious books talk to you about self-imposed discipline. Our life is a process of continuous discipline, control, suppression. We are held, blocked, restrained, so that we never know a moment in which there is a freedom, a spontaneity. We are controlled, self-enclosed. Ask your teachers. Ask what these words mean.

क्या आप कभी शांतिपूर्वक बैठे हैं? कभी इस प्रकार से बैठने का प्रयत्न करके देखिए--किसी प्रयोजन से नहीं, बस ऐसे ही--केवल यह जानने के लिए कि क्या आप शांतिपूर्वक बैठ सकते हैं? जैसे-जैसे आप बड़े होने लगते हैं आप और भी अधिक व्याकुल, अशांत और उद्विग्न रहने लगते हैं। क्या आपका ध्यान कभी इस पर गया है कि बड़े लोग किस तरह पैर हिलाते रहते हैं? और कई बार तो छोटे भी हमेशा ऐसा करते हैं। यह किसी तरह के तनाव को, किसी तरह की व्याकुलता को दर्शाता है। हम सोचते हैं कि इस प्रकार की व्याकुलता को, इस तनाव को दूर करने के लिए अनुशासन के विभिन्न तरीकों को काम में लाया जा सकता है। क्या आप इस शब्द का अर्थ जानते हैं? आपके शिक्षक आपसे अनुशासन के बारे में अक्सर बोलते होंगे। धार्मिक पुस्तकें भी ऐसे अनुशासन की बात करती हैं जिसे हम खुद ही अपने ऊपर मढ़ते हैं। हमारा जीवन अनुशासन, नियंत्रण और दमन की एक अनवरत प्रक्रिया है। हमें अवरुद्ध, कुंठित और सीमाओं के भीतर रहने के लिए विवश किया जाता है, इसलिए हम कभी पल भर के लिए भी स्वतंत्र होना, सहजस्फूर्त होना नहीं जान पाते। हमें अंकुश में रखा जाता है, हम अपने अंदर ही कैद रहते हैं। अपने अध्यापकों से पूछिए। उनसे इन शब्दों के अर्थ जानिये।

Did you; as I suggested yesterday, spend ten minutes of your classtime discussing these things? Did some of the teachers talk to you about all these things before the class began? Why don't you insist on it? Why don't you make the teachers talk to you about this? The teachers and the grown-up people are all anxious to get on with their classes, with their jobs. They never have time to look around. But if you insist, every morning, that you spend ten minutes of your classtime talking about more important things, you will learn a great deal.

जैसा कि कल मैंने सुझाव दिया था, क्या आपने अपनी क्लास में इन बातों पर चर्चा करने के लिए दस मिनट निकाले? क्लास शुरू होने से पहले आपके किसी शिक्षक ने क्या इन बातों पर आपसे चर्चा की? आप उनके पीछे क्यों नहीं पड़ते? आप क्यों नहीं अपने शिक्षकों को इस बारे में बातचीत करने के लिए विवश करते? शिक्षक और बड़े लोग केवल इस बात की चिंता करते हैं कि कक्षाएं कैसे भी चलती रहें, उनकी नौकरी बनी रहे। उन्हें अपने आसपास देखने की फुरसत नहीं होती। परंतु यदि आप थोड़ा जोर देकर उनसे कहें कि प्रतिदिन कक्षा के घंटे में से दस मिनट कुछ दूसरी महत्त्वपूर्ण बातों पर चर्चा के लिए दें, तो आप काफी कुछ सीख सकेंगे।

As I was saying, we never know a

जैसा कि मैं कह रहा था, हमें पल भर के लिए

## Chapter 7

moment of real freedom, and we think that freedom comes through constant discipline, training, control. I do not think discipline leads to freedom. Discipline leads only to more and more self-enclosed minds. I know I am saying something which probably you have not heard before.

You have always heard that you must have discipline to have freedom. But if you inquire, if you look into that word, into the meaning and significance of that word, you will find that discipline means resistance against something, the building of a wall and the enclosing of yourself behind that wall of ideas. That is foolish because the more you become disciplined, the more you control, suppress, restrain, the more your mind becomes narrow, small. Have you not noticed that those people who are very disciplined have no freedom? They have no spontaneous feelings, no width of understanding. The difficulty with most of us is that we want freedom, and we think discipline will lead us to it, and yet, on the other hand we cannot do just what we want; to do exactly what we please is not freedom because we still have to live with others, we have to adjust, we have to fit in with things as they are.

As well as this superficial desire to do just what we like, is there not also a deeper want, an urge to do something creative, out of ourselves? But we really are not able, freely, spontaneously, to do what we want; there is contradiction, a conflict, between what we want to do and what we should do. Gradually, what we want to do begins to give way, to

भी सच्ची स्वतंत्रता का एहसास नहीं होता, और हम सोचते रहते हैं कि सच्ची स्वतंत्रता तो लगातार अनुशासन, प्रशिक्षण और नियंत्रण से आएगी। मुझे नहीं लगता कि अनुशासन से स्वतंत्रता आती है। अनुशासन तो हमारे मनो को और भी संकीर्ण, अपने आप में सीमित और बंद करता है। मैं जानता हूँ कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ ऐसी बातें शायद आपने पहले कभी नहीं सुनी हों।

आपने अभी तक यही सुना है कि स्वतंत्रता के लिए अनुशासन ज़रूरी है। लेकिन यदि आप इस बारे में खोजबीन करें, इस शब्द के अभिप्राय और आशय का पता लगाएं तो आप देखेंगे कि अनुशासन का अर्थ है किसी चीज़ का प्रतिरोध करना, मान्यताओं की एक दीवार खड़ी करना, और उस दीवार के पीछे अपने आपको पूरी तरह से बंद कर लेना। यह एक मूर्खता ही है क्योंकि आप जितना अधिक अनुशासनबद्ध होते हैं, आप जितना अधिक अंकुश स्वयं पर लगाते हैं, जितना दमन करते हैं और जितना अधिक संयम साधते हैं, आपका मन उतना ही अधिक संकीर्ण, क्षुद्र होने लगता है। क्या आपने नहीं देखा कि जो लोग बहुत अनुशासन में रहते हैं उनके पास स्वतंत्रता होती ही नहीं? उनमें सहज भावनाएं नहीं होतीं, उनकी समझ विशाल नहीं होती। हममें से अधिकांश की कठिनाई यह है कि हम स्वतंत्रता तो चाहते हैं, और सोचते हैं कि अनुशासन के द्वारा हम इस तक पहुंच जाएंगे लेकिन साथ ही हम वह सब नहीं कर पाते जो हम करना चाहते हैं। अपनी मर्जी के अनुसार हर चीज़ कर पाना स्वतंत्रता नहीं है क्योंकि हमें बाकी लोगों के साथ भी तो रहना है, हमें सबके साथ सामंजस्य रखना है, हमें व्यवस्था के साथ तालमेल बनाते हुए जीना है।

हमें जो अच्छा लगता है उसे हम कर पाएं, ऐसी सतही इच्छा के साथ-साथ क्या हममें एक और गहनतर अभिलाषा, एक ऐसी उत्कंठा नहीं होती है कि हम कुछ सृजनात्मक करें, अपनी स्वतःस्फूर्त इच्छा से कुछ करें? परंतु हम ऐसा जो कुछ करना चाहते हैं उसे स्वतंत्रतापूर्वक, सहज रूप से कर पाएं, वास्तव में हम इसके काबिल नहीं होते हैं, क्योंकि हम जो कुछ करना चाहते हैं और जो हमें करना चाहिए, इसके बीच अंतर्विरोध होता है, द्वंद्व

## Chapter 7

disappear, and the other thing remains—what we should do, the ideal that others want us to do, what the teachers, the parents, the other boys or girls want us to do. Deep down within me there is a feeling, there is an urge, there is a demand to do something creative, just really out of myself. But to find out what that action out of myself is, requires a great deal of understanding. It is not just doing what I like. Each one, in his self-imposed prison, does what he likes, but that is a superficial action.

To find out and do something which you feel deeply, inwardly, spontaneously, easily, is very difficult because we are suppressed. Have you not noticed how people say, 'Do this and do not do that'? Are they not always telling you that? So gradually you get into the habit of doing things without much thought; so you become automatic, like a machine that functions, but without much vitality, without energy, without a great deal of thought, insight, love, affection, sensitivity. So, you have difficulty in finding something that you love to do. Also, your education does not help you to discover what you really, deeply, inwardly want to do because your teachers and your parents find it so much easier to impose through education, through control, something that you should do. What they consider to be your duty, your dharma, your responsibility, is forced on you; and gradually the things of beauty, the things that you yourself feel you could do if given an opportunity are destroyed. So with most of us, there is inwardly a conflict going on all the time between the thing that I want to do deeply—in which I am interested and which demands a great deal of

होता है। धीरे-धीरे हम जो करना चाहते हैं वह क्षीण होने लगता है, खो जाता है, और दूसरा सब--हमें क्या करना चाहिए, क्या आदर्श होने चाहिए आदि जिन बातों की शिक्षकगण, माता-पिता तथा अन्य लड़के-लड़कियां हमसे अपेक्षा करते हैं वह सब बचा रहता है। मेरे हृदय की बहुत गहराई में एक भावना होती है, कुछ सृजनात्मक करने की ललक होती है, अपने आप से ही कुछ करने की उमंग होती है। लेकिन अपने भीतर की उस चीज़ को खोज पाने के लिए बहुत अधिक समझ की ज़रूरत होती है। यह सिर्फ मुझे जो पसंद है वही करना नहीं है। हममें से हर कोई अपने बनाए कारागृह में जो अच्छा लगता है वह करता है, लेकिन वह तो सतही क्रिया होती है।

आप जिसे अपने भीतर गहराई से, अपने अंतःकरण में, सहजस्फूर्ति से, सरलतापूर्वक महसूस करते हैं उसे ढूँढ़ पाना और उसे कर पाना अत्यंत कठिन होता है क्योंकि आप दमन में जीते हैं। क्या आपने इस बात पर कभी ध्यान नहीं दिया कि लोग अक्सर 'इसे करो, वह मत करो' कहते हैं? क्या वे आपसे हमेशा यही नहीं कहते हैं? इसलिए आप धीरे-धीरे बिना सोचे-समझे काम करने के आदी हो जाते हैं, आप किसी मशीन की तरह स्वचालित हो कर काम करने लगते हैं जिसमें न कोई प्राण होते हैं, न कोई जीवंतता और न कोई सोच-विचार, अंतर्दृष्टि, प्रेम, स्नेह या संवेदनशीलता ही। यही कारण है कि आप ऐसा कुछ नहीं ढूँढ़ पाते जिसे करने से आपको प्रेम हो। फिर आपकी शिक्षा भी यह खोजने में आपकी मदद नहीं करती कि आप अपने अंतर्तम??अंतरतम से, अंतःकरण की गहराई से वास्तव में क्या करना चाहते हैं क्योंकि आपके शिक्षकों तथा अभिभावकों को यही अधिक सरल लगता है कि शिक्षा के माध्यम से, नियंत्रण के बहाने, वे आप पर वह सब थोप सकें जो उनकी दृष्टि में आपको करना चाहिए। जिसे वे आपका कर्तव्य, धर्म, और उत्तरदायित्व समझते हैं उसे बलपूर्वक आप पर आरोपित कर देते हैं, और धीरे-धीरे वह सारी चीज़ें जो सौंदर्यपूर्ण हैं, जिनके लिए आपको यह लगता है कि एक अवसर मिले तो आप उन्हें कर सकेंगे, नष्ट हो जाती हैं। अतः हममें से अधिकांश के मन में द्रुद्ध छिड़ा रहता है--मैं जिसे गहराई से करना चाहता हूँ, जिसमें मेरी बड़ी रुचि है, उसमें तथा मुझे क्या करना चाहिए, समाज मुझसे क्या चाहता है, इसमें। जिसमें मेरी गहरी दिलचस्पी है उसे करने में

## Chapter 7

understanding, a continual putting aside of things which are worthless—and what I should do, what society demands, what the teachers have told me, what tradition has said. So, there is conflict between the two, and we think that freedom comes through controlling one thing against the other, through disciplining ourselves to a particular pattern of thought.

In a school of this kind, is it not very important to understand the question of discipline? We must have order when there are three hundred or one hundred or even ten boys and girls. But to bring order among many is very difficult because every boy and girl wants to do something of their own. The students here are well-fed, young, full of vitality and pep, and they want to burst out; the teachers want to hold them, to keep them in order, to make them study, to regularize their life.

Now is it not very important for the educator and also for you to find out what discipline means, what it implies? Certainly we must have order, but order requires explanation, intelligence, understanding, not suppression and saying, 'Do this and do not do that. If you do not do that, you will get lower marks, you will be reported to the principal, to your guardian, to your parents.' Suppression does not bring order; really it brings chaos, it really produces a revolt, an ugly mind. Whereas, if we take trouble, if we have the patience to explain the importance of having order, then there will be order. For instance, if you do not all turn up for a meal at the right time, think what a lot of

अत्यधिक गहरी समझ की और जो कुछ भी बेमानी है उस सबको लगातार परे हटाते रहने की ज़रूरत होती है—जैसे कि मुझे क्या करना चाहिए, समाज मुझसे क्या चाहता है, शिक्षक मुझसे क्या करवाना चाहते हैं, परंपरा क्या कहती है, आदि-आदि। इसलिए इन दोनों के बीच टकराव बना रहता है और हम सोचने लगते हैं कि इनमें से एक के खिलाफ दूसरे पर अंकुश लगाने से, अपने आपको किसी खास विचारधारा में अनुशासित कर लेने पर स्वतंत्रता प्राप्त हो सकेगी।

इस प्रकार के विद्यालय में क्या यह बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है कि अनुशासन के प्रश्न को समझा जाए? जहां पर तीन सौ या एक सौ या केवल दस लड़के-लड़कियां भी हों वहां कोई-न-कोई व्यवस्था तो ज़रूरी होती है। किंतु बहुत अधिक लोगों के बीच व्यवस्था बनाए रख पाना अत्यंत कठिन होता है क्योंकि हर लड़के और लड़की की अपनी-अपनी इच्छा होती है। यहां के छात्रों को भरपेट भोजन मिलता है, वे तरुण हैं, उनमें जोश और स्फूर्ति है, और वे जीवन से छलक रहे हैं, शिक्षक उन्हें नियंत्रण में रखने का प्रयत्न करते हैं, उन्हें किसी व्यवस्था में बांध रखना चाहते हैं, उन्हें अध्ययन में लगाए रखना चाहते हैं, और उनके जीवन को नियमबद्ध बनाना चाहते हैं।

आपके शिक्षकों और आपके लिए भी क्या यह पता लगाना बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है कि अनुशासन क्या है, उसके निहितार्थ क्या हैं? इसमें संदेह नहीं कि किसी-न-किसी प्रकार की व्यवस्था तो ज़रूरी है, पर व्यवस्था के लिए कोई उचित तर्क, प्रज्ञा और समझ ज़रूरी होती है—न कि दमन और यह कहा जाना, 'यह करो, वह मत करो। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको कम अंक दिए जाएंगे, प्राचार्य से आपकी शिकायत की जाएगी, आपके अभिभावकों को, आपके माता-पिता को इसकी सूचना दी जाएगी।' दमन से व्यवस्था नहीं आती बल्कि इससे तो अव्यवस्था ही उत्पन्न होती है, विद्रोह ही जन्म लेता है, कुरूप मन का ही जन्म होता है। जबकि अगर हम थोड़ा कष्ट उठाकर धैर्य रखते हुए व्यवस्था के महत्त्व को समझाएं तो व्यवस्था संभव है। मान लीजिए कि भोजन के समय आप नहीं पहुंचते हैं तो रसोई का प्रबन्ध

## Chapter 7

trouble you will give to the cook. Your food will get cold, it will be bad for you to eat cold food. You will become more and more inconsiderate—that is really the problem. If you are considerate, if you are thoughtful—both the old and the young—then you will have order. Unfortunately, the old people are not considerate either; they are concerned about themselves, about their problems, their difficulties, their jobs.

In this school, right from the beginning, we have to understand intelligently what discipline is. Discipline comes naturally out of consideration. Discipline is not resistance; it is really adjustment, is it not? When you consider somebody, you adjust, and that adjustment is natural because it is born out of thought, care, affection. Whereas, if you merely say, 'You must be very punctual for a meal; otherwise, you will have no meal and will be punished,' there is no understanding, no consideration. Suppose a boy does not get up early in the morning, the housemaster disciplines him and says, 'You must get up early; otherwise, you will be punished,' or he persuades the boy through love. But these are all forms of fear, of inconsideration. The teacher has to find out why the boy is lazy. It may be that the boy wants to attract the teacher, or probably he has had no love at home and therefore wants protection, or he is not getting the right food or enough rest or enough exercise. Without going into all this, the problem of discipline is very trivial.

करने वालों को कितनी परेशानी होगी। आपका भोजन भी ठंडा हो जाएगा और ठंडा भोजन करना आपकी सेहत के लिए ठीक न होगा। आप धीरे-धीरे और अधिक संवेदनाहीन होते जाएंगे--जो सचमुच समस्या है। यदि आप दूसरों का ख्याल रखते हैं, दूसरों के बारे में सोचते हैं--यह बात बड़ों और छोटों पर समान रूप से लागू होती है--तो आप व्यवस्था बनाए रखेंगे। दुख की बात है कि बड़े लोग भी संवेदनशील नहीं होते--उन्हें बस अपनी ही चिंता होती है, अपनी समस्याओं की, अपनी मुश्किलों की और अपनी नौकरी की।

हमें बिल्कुल शुरू में ही विवेकपूर्ण ढंग से यह समझना होगा कि अनुशासन क्या होता है। जैसे ही आप संवेदनशील होते हैं अनुशासन अपने आप आ जाता है। अनुशासन प्रतिरोध नहीं है, अनुशासन तो वास्तव में सामंजस्य करना है--है कि नहीं? जब आप किसी व्यक्ति का ध्यान रखते हैं तो आप सामंजस्य करते हैं और यह सामंजस्य स्वाभाविक तरीके से होता है क्योंकि यह समझ, स्नेह और प्यार से उत्पन्न होता है। जबकि ऐसा कह देना कि, 'भोजन के लिए आप ठीक निर्धारित समय पर आ जाएं नहीं तो आपको भोजन नहीं मिलेगा और आपको दंडित भी किया जाएगा', तो इसमें न तो समझदारी है, न दूसरों का ख्याल है। मान लीजिए एक छात्र सुबह जल्दी नहीं उठ पाता और छात्रावास प्रभारी उसे अनुशासनबद्ध करने के लिए कहता है, "आपको सुबह जल्दी उठना होगा नहीं तो आपको इसकी सजा मिलेगी", या दूसरा तरीका यह है कि वह उस छात्र को प्यार से समझाकर सुबह जल्दी उठने के लिए राजी कर लेता है। किंतु यह सभी तरीके भय के रूप हैं--दूसरों के प्रति असंवेदनशील होने के ही प्रकार होते हैं। शिक्षक को इसका पता लगाना चाहिए कि वह छात्र आलस्य क्यों करता है। शायद वह शिक्षक का ध्यान अपनी ओर खींचना चाह रहा हो या यह भी हो सकता है कि घर पर उसे स्नेह न मिला हो और इसलिए उसमें असुरक्षा की भावना आ गयी हो--वह सुरक्षित महसूस करना चाह रहा हो, या उसे सही ढंग का भोजन या पर्याप्त आराम न मिल पा रहा हो, या वह उचित व्यायाम न कर पा रहा हो। इस सब पर विचार न किए जाने पर अनुशासन की समस्या को केवल सतही तौर पर ही हल किया जा सकेगा।

## Chapter 7

So, what is important is not discipline, control, or suppression but the awakening of that understanding which will regard all these problems intelligently, without fear. That is very difficult because there are very few teachers in the world who understand all these things. Surely, it is the job of the Rajghat School and the Foundation to see that this thing is done so that when the students leave this place, they are real human beings with consideration, with intelligence, who can look at everything without fear, who will not function thoughtlessly, but who will understand and be able to fit even into a society which is rotten. All these questions should be thought over every day, not by mere lectures given by the teachers, but by discussion between the teachers and the students so that when the students leave this place and enter life, they are prepared to face it in such a way that life becomes something happy and not a constant battle and misery.

Question: It is said that science has produced benefit as well as misery. Is science really beneficial to man?

Krishnamurti: Before I answer that question, I should like to know if you listened to what I have just been saying? The question came right on top of what I was saying. There was no gap, no interval. I am not criticizing you; I am not saying you are right or wrong. But is it not important to find out what the other man is saying? You really were not listening to what I was saying because your question was going on in your mind. You know, I have said this half a dozen times so far, and yet

अतः अनुशासन, नियंत्रण या अंकुश महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि उस समझ का जागना महत्त्वपूर्ण है जो इन सभी समस्याओं पर विवेकपूर्वक, निर्भयतापूर्वक ध्यान दे सके। यह बहुत कठिन है क्योंकि संसार में ऐसे गिने-चुने शिक्षक ही होंगे जो इन सारी बातों को समझ सकें। निश्चित ही राजघाट स्कूल एवं फाउन्डेशन का यह कार्य है कि इसे क्रियान्वित करे ताकि जब छात्र इस स्थान से बाहर जाएं तो वे सजग, प्रज्ञापूर्ण, ऐसे मानव बन कर निकलें जो प्रत्येक बात का निरीक्षण निर्भयतापूर्वक कर सकें, जो सोचे-समझे बिना कोई काम न करें बल्कि उनमें गहरी समझ हो तथा इस योग्य हों कि एक सड़े-गले समाज में भी सामंजस्यपूर्वक जी सकें। इन सभी प्रश्नों पर रोजाना विचार होना चाहिए--सिर्फ अध्यापकों द्वारा दिए जाने वाले भाषणों के रूप में ही नहीं बल्कि शिक्षकों एवं छात्रों के मध्य संवाद के रूप में ताकि जब छात्र इस स्थान से जाएं और व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करें तो वे उसका सामना इस प्रकार करने के लिए तैयार हों कि जीवन एक आनंद प्रद चीज़ बन जाए न कि निरंतर संघर्ष तथा क्लेश का कारण।

प्रश्न : ऐसा कहा जाता है कि विज्ञान ने जहां एक ओर हमारे जीवन के लिए अनेक हितप्रद कार्य किए हैं वहीं दूसरी ओर हमारे क्लेशों में वृद्धि भी की है। क्या विज्ञान वास्तव में मनुष्य के लिए हितकारी है?

कृष्णमूर्ति : इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले मैं यह जानना चाहूंगा कि मैं अभी-अभी जो कुछ कह रहा था क्या आपने उसे ध्यान दे कर सुना? मेरी बात पूरी हुई भी न थी कि आपने प्रश्न पूछ लिया। कोई अंतराल या ठहराव न था। मैं आपकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आप ठीक हैं या गलत हैं। परंतु क्या यह जान लेना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि दूसरा क्या कह रहा है? आप सच में मैं जो कह रहा था उसे सुन नहीं रहे थे क्योंकि आपके मन में तो आपका प्रश्न ही घूम रहा था। आप जानते हैं कि मैंने ऐसा इससे पहले भी आधा दर्जन बार कहा है और फिर भी आप ऐसा ही कर रहे हैं। क्या इससे

## Chapter 7

you go on doing it. Does it not show a lack of consideration? If you were really interested in what was being said, you would have listened. It requires thought because we are dealing with difficult subjects, and so if you want to listen, you cannot just jump into questions. May I suggest that tomorrow you write out your questions? Take the trouble to put them down on a piece of paper. Then when I have spoken, wait a few minutes or seconds and then ask. This will help you to see how your own mind is working. What I am saying is not very complicated. I am putting into words the operation of your own mind. If you want to understand, if you want to see how your mind works—and that is the only way we can look at life—it is very important to understand what is being said.

You say science has brought great benefits to man and also great misery and destruction. Is it on the whole beneficial or destructive? What do you think? Communication has improved. You can send letters to America in a couple of days. You can have the latest news from all over the world tomorrow morning or this evening. Extraordinary miracles are going on in surgical operations. At the same time, there are warships and submarines which are most destructive. The latest submarines can go round the world indefinitely under water, never coming to the top, run by atomic power. There are airplanes with bombs that can destroy thousands of human beings in a few seconds. Is it science that is wrong, or the human beings that use science? I am a Hindu or a Muslim or a Christian, so I have a particular idea which I think is more important than anybody else's idea, and I am very nationalistic. You know what

आपकी लापरवाही नहीं ज़ाहिर होती? जो कुछ कहा जा रहा था उसमें यदि आपकी सच में रुचि होती तो आप उसे ध्यानपूर्वक सुनते। चूंकि हम यहां कठिन विषयों पर विचार कर रहे हैं इसलिए गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया जाना ज़रूरी है, और यदि आप मन लगाकर सुनना चाहते हैं तो आप इतनी शीघ्रता से प्रश्न नहीं कर सकेंगे। क्या मैं आपको यह सुझाव दे सकता हूं कि कल से आप अपने प्रश्न लिख कर रखा करेंगे? फिर जब मेरा बोलना समाप्त हो जाए तो दो-चार मिनटों के लिए, पल-दो-पल के लिए रुकें और फिर उसे पूछें। इससे आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि आपका मन किस रीति से कार्य करता है। मैं जो कुछ कह रहा हूं वह बहुत जटिल नहीं है। आपके अपने ही मन की कार्यप्रणाली को मैं शब्द दे रहा हूं। यदि आप समझने के इच्छुक हैं, यदि आप यह देखना चाहते हैं कि आपका मन किस तरह से कार्य करता है--और वही एकमात्र तरीका है जिससे हम जीवन का अवलोकन कर सकते हैं--तो जो कुछ कहा जा रहा है उसे समझना महत्त्वपूर्ण है।

आप कहते हैं कि विज्ञान ने मनुष्य की भलाई के बड़े-बड़े कार्य किए हैं और उसके कारण अत्यधिक क्लेश एवं विनाश के कार्य भी हुए हैं। कुल मिलाकर यह उपयोगी है या विनाशकारी? आपका क्या विचार है? संचार के क्षेत्र में अवश्य ही सुधार हुआ है। आप कुछ ही दिनों में अमेरिका पत्र पहुंचा सकते हैं। पूरे संसार की नवीनतम खबरें आप कल सुबह तक या आज शाम तक ही प्राप्त कर सकते हैं। सर्जरी के क्षेत्र में असाधारण चमत्कार हो रहे हैं। किंतु दूसरी ओर ऐसे युद्धक जहाज और पनडुब्बियां भी बन रही हैं जो अत्यंत घातक हैं। परमाणु शक्ति से चलने वाली आधुनिक पनडुब्बियां लगातार अनिश्चित रूप से लंबे समय तक पानी में रहकर पूरी दुनिया का चक्कर लगा सकती हैं--उन्हें पानी के ऊपर आने की ज़रूरत नहीं होती। ऐसे बमवर्षक विमान हैं जो कुछ ही पलों में हजारों मनुष्यों को मिटा सकते हैं। क्या यह विज्ञान है जिस पर दोष मढ़ा जाए या मनुष्य है जो इसका इस्तेमाल करते हैं? मैं हिंदू, मुसलमान या ईसाई हूं और इसलिए मेरे कुछ विशिष्ट विचार हैं जिन्हें मैं किसी भी दूसरे मनुष्य के मत से अधिक महत्त्वपूर्ण मानता हूं, मैं कट्टर राष्ट्रवादी हूं। आप इसका अर्थ जानते ही हैं। मुझे ऐसा लगता है, मैं चाहता हूं मेरा बोलबाला हो, मैं

## Chapter 7

that means. I feel I want to dominate, I want to control not only individuals but also groups of people. So, I use destructive means, I use science. It is me that is misusing science, not that science in itself is wrong. Jet planes are not wrong in themselves, but it is how America or Russia or England uses them. Is this not so?

केवल व्यक्तियों पर ही नहीं बल्कि समुदायों पर भी नियंत्रण करना चाहता हूँ। इसलिए मैं विनाशकारी साधन अपनाता हूँ, मैं विज्ञान का इस्तेमाल करता हूँ। विज्ञान का दुरुपयोग मैं ही तो कर रहा हूँ न कि विज्ञान अपने आप में गलत है। जेट विमान अपने आप में कोई बुरी चीज़ नहीं है, यह तो अमेरिका, रूस या इंग्लैंड द्वारा उनके उपयोग का तरीका है, जो बुरा हो सकता है। क्या ऐसा ही नहीं है?

Can human beings change? Can they cease to be Hindus, Muslims? There is a division between India and Pakistan, between Russia and America, England and Germany, France and other countries. Can we be human beings without being Frenchmen or Indians so that we can live together? Can we have a government which looks after all of us, not India or America only, but all of us together as human beings?

क्या मनुष्य बदल सकता है? क्या उसका हिंदू, मुसलमान होना समाप्त हो सकता है? भारत और पाकिस्तान के बीच, रूस तथा अमेरिका के बीच, इंग्लैंड और जर्मनी के बीच, फ्रांस तथा अन्य देशों के बीच एक दरार है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम फ्रेंच या भारतीय न होकर केवल मनुष्य बन कर रहें, परस्पर सौहार्दपूर्वक रहें? क्या हम सबकी एक ऐसी साझा सरकार नहीं हो सकती जो सिर्फ भारत या अमेरिका ही नहीं बल्कि हम सभी की मानव के तौर पर देखभाल करे?

When human beings misuse science, we blame science. But it is you and I, the Russian and the American, the Frenchmen and the German, who are responsible for all this. That is why, in a school of this kind, there should be no feeling of nationality, no feeling of class, no feeling that you are a Brahmin and I am an untouchable. We are all human beings, whether we live in Banaras or New York or California or Moscow. It is our world. This world is ours, yours and mine, not the Russians' or the Englishmen's, not the Indians' or the Pakistanis'; it is ours. And with that feeling, science will become an extraordinary thing, but without that feeling we are going to destroy each other.

जब मनुष्य विज्ञान का दुरुपयोग करता है तो विज्ञान को दोषी कहा जाता है। किंतु यह तो आप और मैं--रूसी तथा अमेरिकन, फ्रेंच तथा जर्मन ही हैं जो कि इस सब के लिए उत्तरदायी हैं। इसलिए इस प्रकार के किसी विद्यालय में राष्ट्रीयता की भावना को स्थान न दिया जाए--वर्ग की भावना को, या आप ब्राह्मण हैं तथा मैं अछूत--इस तरह की भावना को ज़रा भी महत्त्व न दिया जाए। हम सब मनुष्य हैं, चाहे हम बनारस में रहते हों या न्यूयार्क में या मास्को में। यह हमारा संसार है। यह संसार हम सबका है। यह संसार आपका है; आपका तथा मेरा है न कि रूसी या अंग्रेज का, यह न तो भारतीय का है न पाकिस्तानी का है--यह हमारा है। ऐसी भावना होने पर विज्ञान एक अद्भुत चीज़ बन जाएगा और यदि ऐसी भावना नहीं है तो हम एक दूसरे को नष्ट ही करते रहेंगे।